महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्य - विरचित तेलगुपद

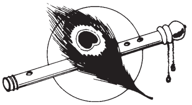

प्रकाशन:
श्रीकृष्ण सेवा समिति, हैदराबाद

ज्येष्ठ, वि.सं. २०७५
मई २०१८

मुद्रण:
विस्तार ग्राफिक्स, हैदराबाद

।। प्राक्कथन।।

श्रीवल्लभाचार्य - विरचित तेलगुपद

महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्यचरण विरचित उनकी मातृभाषामें लिखे तेलगुपद पहली बार प्रकाशित हो रहे हैं जो सभी वैष्णव जनके लिये नितान्त सौभाग्याभिनन्दनकी बात है।

हैदराबादस्थित परम सज्जन श्री बी.वी.एस.आर. मूर्तिजीके उदारमना सहयोग तथा अनुरोधवश प्रध्यापक श्रीवेतुरी आनन्दमूर्तिजीसे देवनागरी लिपिबद्ध तेलगुपद पढ़वाकर हिन्दी भावानुवादके साथ हम यहां प्रकाशित कर रहे हैं। वैसे सोलह गीतोंका उल्लेख मातृकाओंमें मिलता है परन्तु तेलगु न जाननेवाले किन्हीं लिपिकर्ताओं द्वारा देवनागरीमें ये पद लिखे हुए होनेसे आनन्दमूर्तिजी भी भलीभांति पढ़ नहीं पाये। अतः जैसा वे ज़ितना पढ़ पाये, उसे अपनी हार्द्रिक कृतज्ञता ज्ञापनके साथ यहां प्रकाशित कर रहे हैं।

इन गीतों को सुप्रसिद्ध गायक श्री डी. वी. मोहनाकृष्णा ने स्वरबद्ध किया है। इन सभी महानुभावों का सहयोग सदा अविस्मरणीय रहेगा।

इन तेलगु गीतं पदों को शास्त्रीय संगीतकी कर्णाटक शैलीमें स्वरबद्ध कर सुगेय बनानेका भी मेरा हार्दिक मनोरथ जो रहा उसे श्रीमती अनिता भरत शाह के सामने प्रकट किया और इन्होंने शीघ्र ही दाक्षिणात्य शैलीके विद्वान कलाकारोंके सुमधुर कंठसे गवा कर महाप्रभुकी बड़ी अभिनंदनीय सेवा की है। एतदर्थ इनको सहयोग प्रदान करनेवाली श्रीकृष्ण सेवा समिति समेत सभीको अभिनंदित और साधुवाद प्रदान करते हुए

- गोस्वामी श्याम मनोहर

विषय सूचिका

१	कनकाचल समधीरं	७
२	वंदे श्रीरघुरामं	७
३	चंदमामा तेवे	८
४	शंखु चेत पट्टुकुन्न	१०
५	इंतुलाल चेप्परे वा	१५
६		

।। श्रीकृष्णाय नमः ।।

।। महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्य विरचित तेलुगुपद ।।

कनकाचल समधीरं। कामित जन (मंदारम्)

घनकौस्तुभमणिहारं। गोष्टांगण संचारम्।।

कलये गोपकुमारं। गोपीमानस चोरम्।।

(पल्लवि)।।

भावार्थ: कनकाचल (मेरु पर्वत) के सम धैर्यवान्। भक्तोंके कामितार्थ दाता। कौस्तुभमणिहारधारी। गोष्टांगणसंचारी। गोपकिशोर। गोपीमानसचोर, (श्रीकृष्ण। आपको नमस्कार)।

(श्रीरामचंद्रजीका पद)

वंदे श्रीरघुरामं। वंदे जगदभिरामम्।। (पल्लवि)

दशरथराजकुमारं। मुनिमानस संचारम्।।

वननिधिसमगंभीरं। दानवकलसंहारं।।

अमर भवार्चित वेदं। कमलभवार्चित पादम्।।

सुमधुरमपगतखेदं । विमल निरंतरमोदम् ।।

भावार्थ : श्रीरघुराम। मेरा वंदन स्वीकार करें। सर्व जगतके आनंददाता, नमस्कार। दशरथराजकुमार। मुनिमानस संचार। समुद्रके समान गंभीर। सर्व दानव कुलसंहार। आपके अर्चना विधान केवल शिव और देवता ही जानते हैं। ब्रह्मा आपके चरणोंकी पूजा करते हैं। आपको जानने के बाद ही, आनंदमय स्थितिकी मधुरता मालूम होता है। आपके दर्शनमें अखंड आनंद प्राप्त होता है। ऐसे श्रीराम। आपको प्रणाम करता हूँ।

(चंदमामा पाटा – तेलुगु)

(छोटे बच्चोंकी जिद छुड़ानेके लिए चंद्रमाको संबोधित यह गीत गाते हैं।)

चंदमामा तेवे। जाबिल्लि तेवे।
कंदुवैन नवखंड। कंडचक्केर तेवे।।
मंदलोन नाड कुंड। वंदडोललु तेवे।।
मुत्यसरुलु तेवे। मुर्रुजुन्नु तेवे।।
अत्यनी। । । । तिय्यनि। अट्टुकुलु तेवे।।

तेलुगु पदका अर्थ :

चंदमामा - जाबिल्लि - चंद्रमा

तेवे - लाओ

कंदुवैन - एकांत प्रदेशमें

नवखंड - ताजे टुकड़े

कंडचक्केर -मिश्री

मंदलोनन् - गोसमुदायमे

(नाडकुंड) **आडकुंड** - बिना खेले

वंदडोललु - खेलनेकी वस्तु

तेवे - लाओ

मुत्यसरुलु तेवे - मोतियोंका हार लाओ

मुर्रुजुन्नु - (बछडा देनेके बाद तीन दिन तक मिले दूधसे बनानेवाला) क्षरजं

तेवे - लावो

अत्तिन - अत्यंत

तिय्यनि - मीठी

अटुकुलु तेवे - पोहा लाओ

भावार्थः चन्दमामा लाओ, जाविल्लि लाओ, एकांत स्थलमें स्वादिष्ट ताजा मिश्रीके बड़े - बड़े टुकड़े लाओ, गायोंके साथ मत खेलो, खेलनेकी सामग्री लाओ, सुन्दर मोतियोंका हार लाओ। मधुर विशिष्ट क्षीरज लावो। अत्यंत मीठा पोहा लाओ।

(श्रीविट्ठलनाथके बारेमें पद – तेलुगु)

(विट्ठल भगवान् और वेंकट विट्ठल पर ताल्ळपाक अन्नमाचार्यजीने कुछ पद रचे थे। लेकिन इस पदमें वेकटमुद्र नहीं है। यह पद वल्लभाचार्यजीका हो सकता है।)

शंखु चेत पट्टुकुन्न। स्वामि विट्ठला।
(मंकुपट्टदेल नीकु। मानु) विट्ठला।
गच्चु मीरगा पिलिचिन (गाचु) विट्ठला, कँन्लू
गच्चकाय लाय, नेदुरु -। - गाँचि विट्ठला।
म्रोक्केद म्रोक्केद नीकु। मुद्दु विट्ठला
चक्कनि मा तंड्री। स्वामि विट्ठला।
द्वारकानाथुडवय्या। दारु विट्ठला।
श्रीरुकुमिणीपतिवि नीवे श्रीविट्ठला
श्रीसत्यभमपतिवि (सिरुल) विट्ठला।
वासवादिविनुत सार्वभौम विट्ठला।।

तेलुगु पदका अर्थ:

शंखु चेत पट्टुकुन्न - हाथमें शंख पकड़ने वाला
स्वामि विट्ठला - व़िठ्ठल स्वामी
नीकु - तुम्हें
मंकुपट्टदेल - जिद्द क्यों करते हो
माानु - (जिद) छोड़ दो, व़िठ्ठला
गच्चु मीरगा (अनुरागके साथ)

पिलिचिन - बुलानेपर
(गा) काचु - रक्षा करनेवाला, विट्ठला
(ने) एदुरु गांचि - इंतज़ार करते हुये
कन्लूँ - आंखें
गच्चकायलाय - दुख रहे हैं
म्रोक्केद म्रोक्केद नीकु - तुमको बार - बार नमस्कार करता हूं
चक्कनि - प्यारे
मा तंड्री - हमारे बाबा (प़िताजी) विट्ठला
द्वारकानाथुडवय्या - तुम द्वाराकानाथ हो
दारु विट्ठला (काठसे बने हुये) विट्ठला
श्रीरुकुमिणीपतिवि नीवे - तुम श्रीरुक्मिणीपति हो श्रीविट्ठला
श्रीसत्यभमपतिवि नीवे - तुम श्रीसत्यभामापति हो
(सिरुल) विट्ठला - ऐश्वर्य संपन्न विट्ठला
वासवादिविनुत - इंद्रादि देवताओंकी विनती स्वीकार करनेवाले सार्वभौम विट्ठला।

भावार्थ : यह विट्ठलनाथकी स्तुति है। हाथमें शंख पकड़नेवाले स्वमी। जिद क्यों करते हो। तुम्हें प्रेमसे पुकारनेसे रक्षा करते हो। तुमहारा इंतज़ार करते - करते मेरी आंखें दुःख रही हैं। प्यारे विट्ठल स्वामी। मेरे पिता। तुमको बार-बार नमस्कार करता हूं। द्वारकानाथ। दानशील। दीनदयाल। श्रीरुक्मिणीपति। श्रीसत्यभामापति। देवेंद्रविनुत। सार्वभौम विट्ठला। तुमको मेरा नमस्कार।

(पल्लवि) पंकजनेत्रिकि दंडमाया,

तिरुवेंकटेशुनकु। दंडमया

नल्लनि वानिकि। नागरीकुनकु

तेल्लनि नामपु। देवुनिकि।

चल्लनि चूपुल। जानकी पतिकि,

श्री वल्लभुलकु मा। दंडमया।

किंकिणि धरुनकु गिरिधरुनकुनु

शंकरप्रियुनकु। दंडमया।

लंकरावणुनि। मदमडचिन तिरु

वेंकटेशुनकु। दंडमया

कनकांबरमुनु। कौस्तुभरत्नमु

(वनमालयु गल) वानिकिनि

पणतिनुरम्मुन (बायक निलिपिन)

पद्मनाभुनकु दंडमया।

तेलुगु पद अर्थ:

पंकजनेत्रि कि - पंकजनेत्री लक्ष्मीदेवीको

दंडमया - दंडवत् नमस्कार

तिरुवेंकटेशुनकु - (तिरु - श्री) वेंकटेशको

दंडमया - दंडवत् नमस्कार

नल्लनिवानिकि - श्यामसुंदरको (नल्लनि - काला रंग)

नागरीकुनकु - नागरिकको

तेल्लनि नामपु देवुनिकि - सफेद उर्ध्वपुंड्रधारी भगवानको

चल्लनिचूपुल - (चल्लनि - अनुग्रह पूर्वक) कृपा दृष्टि (से देखने) वाला

जानकी पतिकि - सीतापति श्रीरामको

श्रीवल्लभुलकु - लक्ष्मीवल्लभको

दंडमया - दंडवत् नमस्कार

किंकिणि धरुनकु - किंकिणिधारीको

गिरिधरुनकु - गोवर्धनगिरिधारीको

शंकरप्रियुनकु - शंकरप्रिय भगवानको

दंडमया - दंडवत् नमस्कार

लंकरावणुनिमदमडिंचिन - लंकामें रावणके मदको नाश करनेवाला (श्रीरामको)

तिरुवेंकटेशुनकु - श्रीवेंकटेशको

दंडमया - दंडवत् नमस्कार

कनकांबरमुनु - कनकांबर

कौस्तुभरत्नमु - कौस्तुभरत्न

वनमालयु गल वानिकिनि - वनमालाओंको धारण करनेवाला और

पणथिनुरम्मुन बायक निलिपिन पद्मनाभुनकु - (पण(ड)ति - स्त्री) लक्ष्मीदेवीको निरंतर अपने वक्षस्थलमें धारण किये पद्मनाभको

दंडमया - दंडवत् नमस्कार

भावार्थ : पंकजनेत्री लक्ष्मीदेवीको दंडवत् नमस्कार, तिरुवेंकटेशको दंडवत् नमस्कार। श्यामसुन्दरको, नागरिक भगवानको। सफेद उर्ध्वपुंड्रधारिको दंडवत् नमस्कार। कृपादृष्टिसे देखनेवाले जानकीपति श्रीरामको। लक्ष्मीपतिको दंडवत् नमस्कार। किंकिणि पहननेवाले और गोवर्धनगिरिधारी श्रीकृष्णको दंडवत् नमस्कार। शंकरप्रियको दंडवत् नमस्कार। लंकामे रावणके मदको नाश करनेवाले (श्रीरामको) दंडवत् नमस्कार। श्रीवेंकटेशको दंडवत् नमस्कार। पीतांबर, कौस्तुभरत्न वनमाला और हृदयमें लक्ष्मीदेवीको निरंतर धारण करनेवाले भगवानको दंडवत् नमस्कार। भगवान पद्मनाभको दंडवत् नमस्कार।

(इस तेलुगु गीतमें 'पल्लवि'के साथ तीन चरण हैं। लेकिन पल्लवि मात्र परिष्कृत हुआ। इस बालकृष्णके गीतमें वेंकटमुद्र (छाप) नहीं हैं। यह श्रीवल्लभाचार्यकी रचना हो सकती हैं।

(श्रीबालकृष्णलालजीके पद)

(पल्लवि) इंतुलाल चेप्परे वी। डेव्वडो गानि

(कंतु) नट्लुन्नाडु। गय्यालवाडु।

तेलुगु पद अर्थ:

(इंति - स्त्री) इंतुलाल - गोपियों

चेप्परे - बोलिये

विडेव्वडोगानि - यह कोई

कंतुनट्लुन्नाडु - मन्मथ जैसे दिखायी देता है

(ग) कय्यालवाडु - झगड़ाखोर

भावार्थ: गोपियां। बोलिये यह कौन है। यह झगड़ालु। मन्मथ जैसा द्रिखयी देता है।

(ग्वाले लोग गानेवाले ऐसे गीतको तेलुगुमें ''एल पाटा'' कहते हैं। तिरुपति ताम्र-पत्रोमें ताल्ळपाक अन्नमाचार्यजीके कुछ 'एल पाटलु' हैं। लेकिन यह एल पाटा श्रीवल्लभाचार्यजीकी रचना हो सकती है।

यह पद ''ओंगोलु'' प्रांतके ''मार्कापुरमु'' (चेन्नकेशव क्षेत्र) में विराजे श्रीकृष्ण पर रचा हुआ हैं। यह बालकृष्णको माखन खिलानेके लिये गोपीयां उन्हें बुलानेका संदर्भमें हैं)

(पल्लवि) नीकु नेनु वेन्न पेट्टेनू।

केलकुल रावि रेका, गळमुन पुलिगोरु,

मोललोन पाल शंखुलु, ओ मुद्दुल गुम्मा। (नीकु)

कल्ललेनि बालकुंडा। कोल्ललाडबोकुर नेनु

नल्लनय्य वेन्न पेट्टेनू। ना मुद्दुलगुम्मा। (नीकु)

''मारकापुरमु'' न कोरि कोरि वेलसिन।

मुरलीधरुड कृष्णम्मा।

वेड्डुकगुम्मा। ना मुद्दुलगुम्मा। (नीकु)।

तेलुगु पद अर्थ:

नीकु - तुम्हें

नेनु - मैं

वेन्न - माखन

पेट्टेनू - ख़िलाती हुं

केलकुल रावि रेका - (   )

गळमुन - कंठमें

पुलिगोरु - बाघका नाखून वाले हार

मोललोन - कटि प्रदेशमें

पाल शंखुलु - सफेद शंखोंके (सूत्र) (पहना हुआ)

मुद्दुलगुम्मा - प्यारेलाल

कल्ललेनि - (कल्ल - झूठ लेनि - बिना) सच्चे

बालकुंडा - बच्चा

कोल्ललाड बोकुरा - हमारे मनको चुरओ मत

नल्लनय्य - (नल्ल - काला) श्यामसुंदर

वेन्न पेट्टेनू - माखन खिलाती हूं

मारकापुरमु - मारकापुरमु में

कोरिकोरि - स्वयं इच्छासे

वेलसिन - विराजमान हुआ

मुरलीधरुड कृष्णाम्मा - मुरलीधर श्रीकृष्ण

वेडुकगुम्मा कृष्णाम्मा - प्यारेलाल कृष्ण

भावार्थ: तुम्हें मैं माखन खिलाती हूं। कंठमें बाघके नाखूनका हार, कटिमें सफेद शंखवाले कटिसूत्र पहननेवाला श्रीकृष्ण लाल, तुमको मैं माखन खिलाती हूं। सच्चे बालक। झूठ न बोलना, श्यामसुंदर, तुम्हें मैं माखन खिलाती हूं। स्वयं संकल्पसे मारकापुरमुमें विराजमान हुआ मुरळीधर, कृष्णाम्मा। मेरे प्यारेलाल। तुम्हें मैं माखन खिलाती हूं।

गोपकन्याओंकी जलक्रीडा, उनकी चीरहरण, बादमें उनके उपर श्रीकृष्णका अनुग्रह होना इस गीतका इतिवृत्त है, इस गीतमें २५ चरण हैं। लेकिन, यहाँ परिष्कृत हुआ चरण मात्र दिया गया हैं।

(१) ‘‘नाचारम्मा कट्टिनपाट नाम संकीर्तनमु’’ मुद्रा हैं। इसीलिये इसको नाचारम्माके ‘मूल’गीतके आधारपर परिष्कृत किया गया हैं। इसमें कुछ ‘वचन’ और कुछ ‘पद्य’ हैं।

(२) हर एक चरणमें ‘‘दो पाद’’ हैं।

(३) यह गीत तेलुगु छंद द्विपद रूपमें रचा गया हैं।

(४) इन सुमधुर चरणोंमें ‘यति’ और प्रास होता हैं।

(गोपकन्यायें पानीमे नंगे होकर, गीत गाते नृत्य करते, खेलते खेलते स्नान कर रही थी)

(पल्लवि) शृतुलनु मीरक पाडेद मर्दल
गतुलकु धिमि धिमि दिद्धिमि यनगा
जतुलनु मानक लीलग नंदलि
गतुलकु धळांकु धळ धळळनगा

भावार्थ : मृदंगक धिमि, धिमि, दिद्धिमि, धळांकु, धळ, धळ गतियोंके अनुसार हम शृति बद्ध गीत गायेंगी।

वेणुनादप्रिय परमाणुरूपा
विनुमहो गोपीनाथा
वीणनु मीटुचु पाडेदमोहन
किणिकिणिकिंकिणि किणिकिणि यनगा।।

भावार्थ : वेणुनादप्रिय। परमाणुरूप। गोपीनाथ। श्रीमोहनंकृष्ण। सुनो। ''किणि, किणि, किंकिणि'' शब्दयुक्त वीणावादन करते हुए, हम गायेंगी।

एडद कंचुक मेडय नेवरु रारेदुटिकि
कडिदिमकुरु मानु कंतुडा
मिडिमेलम्मुन मिडिकि मायेड नीवु
वेड विनोदमु लेमि योडेवु।।

भावार्थ : (वक्षस्थल ढकनेवाली) कंचुक अपने स्थानसे फिसलजाने पर किसी स्त्रीके आगे, कोइ भी नहीं जाता हैं। तुम्हारा चुगलीपन छोडो।

मनोरंजनके लिये, हमारे साथ क्रीडा क्यों करना चाहते हो।

(गोपकन्यायें पानीमेंसे बाहर आकर अपनी साडियोंको नहीं देखी)

जलक्रीड चालिंचि - बिलबिल मनि स्त्रीलु
कोलनिगट्टुन वलु - वलु गट्टगा वच्चि
चेलुवैनयट्टि तम - चीरलगानक
वेल वेल मुखमुलु - व्रेलि चिन्नयि पाय

भावार्थ : सब के साब गोपियां वस्त्र पहननेके लिये ह्रदसे बाहर (किनारे) आगयी। उन्होने अपने वस्त्र नहीं देखे। वे नीचेकी तरफ देख रही थी। उनके चहरे छोटे और बेरंग हो गये।

(गोपियोंने अपनी साडियोंको देनेके लिये श्रीकृष्णुसे प्रार्थना की)

मडुगुलेरि तानु वरदुडै तेच्चिच्चे
तडयक श्रीहरि तक्षणमिय्यकोनरे
मडुगुलु कावुगदा वेलसिन मैलवे माकिय्यरा
मडुगुलु माकेलरा अच्युत चीरले इय्यरा।।

भावार्थ : वरदाता। श्रीहरि। हमारे वस्त्र हमें शीघ्र देनेको अंगीकार करो। हे कृष्ण। अच्युत। हमारे वस्त्र परिशुद्ध नही होनेसे उन मैले वस्त्रों को हमें देदो। हमारी साडियां हमे देदो।

वनमुनंदुन्नारमु माकु ना वलिकिरानु सिग्गुरा
कोनिन चीरलनिय्यराकट्टेदमु गोविंद मडुगु लेमु
मच्चे कूर्म वराहावतारुडा अच्युतुड चीरलंदीर
वामनुंड इय्यरा चीरलु वासुदेव इय्यरा।

भवार्थ : हम पानीमें (नही रही) हैं। बाहर आनेमें हमको शरम आती है। गोविंदा। जो साडियां आप ले गये हो उन्हें हमें देदो। हम उनको पहनना हैं।

(चीरलु सिग्गुले)

स्त्रीलकलंकारमु शृंगारमयुड नीविय्यारा

वारिजनाभुडा वासुदेवा हरि वनमाला प्रिया
(इय्यरा)

भावार्थ: हे शृंगारमय। साडियां और शर्मीलापन ही हमारे (स्त्रीयोंके लिये आभरण होते हैं। हमारी साडियां हमें देदो। वारिजनाभ। वासुदेव। हरि। वनमालाप्रिय। हमारी साडियां हमें देदो।

(साडियोंका वर्णन)

सन्नदाटुल चीरे ओयक्का
चाळ्ळु पोसिन चीरे ओयक्का
विन्नदनमुल चीरे विनुमोयक्का
गोविंद कूनचीरे ओयक्का

करकंचुल चीरे ओयक्का
कस्तूरि मल्लि चीरे ओयक्का
ओरयु दंतुल चीरे ओयक्का
उदय रागमु चीरे ओयक्का

अंदमह्निनयट्टिदोयक्का
आवपूवन्ने चीर ओयक्का
अंदमुग मुत्यालु वेंडितो -
हंस चिलकल चीरे ओयक्का।

चिंताकु वन्ने चीरे ओयक्का मोगलि
चिगुरु वन्ने चीरे ओयक्का
चेंद्रकावि चीरे ओयक्का
पोगड (सिरि) वन्ने चीरे ओयक्का।

पगट्टु पट्टु चीरे ओयक्का नीलि -
(वन्ने) कांतुल चीरे ओयक्का
निग निग मेरिसेटिदोयक्का
नीलि मेघपु चायदोयक्का।

भावार्थ : इस गीतके इन चरणोंमें, प्रत्येक गोपी दूसरी गोपीके माध्यम द्वारा श्रीकृष्णसे साड़ियोंके रंग और रूपको वर्णन करती है, ओ (अक्का) दीदी। मेरी साडी फलाने रंगकी है, फलानी शैलीकी है।

(श्रीकृष्णका उत्तर)

ओंदु चेतनु म्रोक्किते चीरेलु ओयक्क इच्चेदनु।
रंडु चेतुल म्रोक्किते वलुवलु रक्षणमय्येनु।

भावार्थ: श्रीकृष्णने उत्तर दिया। हे गोपियों, आपलोग मुझे एक हाथसे अभिवादन करनेसे साडियां कैसे मिलेंगी। दोनो हाथ जोडके आप मुझे प्राणाम करें तो आपको साडियां मिलेंगी और आपकी लज्जाका रक्षण होगा।

(गोपकन्याओंसे श्रीकृष्णकी स्तुति, श्रीकृष्णका वरदान)

किंकण स्वरमुलु गौळस्वरमुलु म्रोयगानु
कोंकोक चेतुलु विडिचि पेट्टि गोविंद हरि यनरे।

भावार्थ: गोविंदा! हरि! बोलते, लज्जा अनुभव करते, कर्धनीकी आवाजके साथ, दोनो हाथ उठाकर गोप्रियोंने श्रीकृष्णको नमन किया और साडियां मांगी।

सुरलु पूलवान कुरियगानु
सुरदुंदुभुले म्रोय सागेनु
हरि अच्युतुंडपुदु वच्चि
वर (मुलिच्चे निच्च) मेच्चि!

भावार्थः उस समय आकाशसे पुष्प वृष्टि हुई। दुंदुभी बजाई गयी। (अच्युत हरि श्रीकृष्ण) गोपियोंकी प्रशंसा करते हुए, इन्हें साडियां देदी और कामित वर भी दिया।

माटलेरुगकुन्न मातो (नाट) लाडे
(मधुनि) कुंज प्रियुडु हरिये !
(पेटंचु चीरेल पेर्मिनि) मा स्वामि
पेट्टे माकोंगोट्लु (सरिये) !

भावार्थ : गोपियां एक शब्द भी बोल न सकीं। मधुनिकुंजप्रिय श्रीकृष्ण तब गोपियोंकी पहनी हुई साडियों पकडके उनके साथ खेलने लगे।

(फलश्रुति)

नाचारम्मा कट्टिन पाटा नामसंकीर्तनमु
वाचवुलार चदिविन विनिना पाडिना पुण्यम्मु !

भावार्थ : नाम संकीर्तन रूपवाला यह नाचारम्माका गीत जो प्रीतिसे गाता है या सुनता है उसे पुण्य प्राप्त होता है।

सुप्रभातम्मुन शुभगा यशोदा
विप्रुल पिलिपिंचि विनयम्मुतोनु
बालकृष्णाम्म शुभचंद्र तारा
बलमुल (मरि) लग्न (बल) मुलनडुग!

तेलुगु पद अर्थ:

सुप्रभातम्मुन - सुप्रभात समयमें
शुभगा यशोदा विपुल पिलिपिंचि - ब्राह्मणोंको बुलाकर
विनयम्मुतोनु - सविनय
बालकृष्णाम्म - शिशु बालकृष्णके बारेमें
शुभचंद्र तारा बलमुल (मरि) (मरियु) - और
लग्न (बल) मुलनडुग - लग्नबलके बारेमें पूछा

भावार्थ: शुभगा यशोदाने पंडितोको प्रातःकाल बुलाकर उन्हें विनयपूर्वक अपने शिशु श्रीकृष्णके शुभचंद्र, ताराबल, लग्नबलोंके बारेमें पूछा।

नल्लन्नि कस्तूरि तेल्ल कप्पुरमु
(चल्लनि) गंधमु सरिपडजेसी,
अल्ल श्रीगंधम्मु सरिपडजेसी
मेल्लन अन्नकु मेयि पूत पूसि
लेक-(नल्लनि अन्नकु नयनमु तेलुपे)

तेलुगु पद अर्थ:

नल्लन्नि कस्तूरि - काली कस्तूरि

तेल्ल कप्पुरमु - सफेद कपूर

(चल्लनि)गंधमु - शीतल चंदन

सरिपडजेसी - जैसे अच्छा हो वैसे

अल्ल श्रीगंधम्मु - श्रीचंदन

सरिपडजेसी - जैसे अच्छा हो वैसे

मेल्लन - सुकुमारताके साथ (या धीरे धीरे)

अन्नकु - श्रीकृष्णको

मेयि पूत पूसि - शरीर पर लेपन करके

(**लेक** - या)

नल्लनि अन्नकु - काले रंगके श्रीकृष्णके

नयनमु - आंखे

तेलुपे - सफेद

भावार्थ: काली कस्तूरि, सफेद कपूर, शीतल (ठंडक पहुंचानेवाला) श्रीचंदन इन सबको अच्छे प्रकारसे (जैसे अच्छा होता है उस प्रकार से) श्यामसुंदर श्रीकृष्णका लेपन किया।

कांचनमयमैन गज्जेल्लु म्रोय

नंचनडकल (वच्चिरतिव) लंदरुनु

मोलनूलु गंटलु मुरवैरि कटिनि

तुललेनिपतकालु तोडगिरातोडव () ।।

() तोडगिरातोडवु यह पादांतमकुटम है।

तेलुगु पद अर्थ :

कांचनमयमैन - सोनेसे बने हुए

गज्जेल्लु - घुंघुरू

म्रोयनंचनडकल - (म्रोयनु अंचनडकल

म्रोयनु - आवाज करते हुए

अंचनडकल - हंसकी चाल चलते हुए

वच्चिरतिवलंदरुनु - वच्चरि अतिवलु अंदरुनु

वच्चरि - आयीं

अतिवलु - स्त्रीयां (गोपीयां)

अंदरुनु - सबके साथ

मोलनूलु - कटिसूत्र

गंटलु - छोटी घंटियां

तुललेनि - तोल न सके

पतकालु - आभरण

तोडगिरातोडवु - ये सब (अच्छी तरह) पहनाया

भावार्थ : सोनेकी धुंधरुओंकी आवाज करते हुए, सब व्रजवासी गापियां वहां आयीं। मणिमयोसे सजे हुए, सुंदर घुंघुरूवाला और छोटी घंटीयोंकी हलकी आवाज करनेवाला कटिसूत्र, श्रीकृष्णको उन्होंने पहना दिया।

(इस गीतमें श्रीकृष्णको गोदमें लेनेके लिए गोपीयां मुझे दो मुझे दो बोलती हुई मांगती थी)

(पल्लवि) आवला ईवला वनितलु पाड
आवलिंचेने श्रीवल्लभुडु
जो जो जो जो।

तेलुगु पद अर्थ :

आवला ईवला - उस तरफ, इस तरफ

वनितलु - स्त्रियां (गोपियां)

जो, जो, जो, बोलते

पाड - (लोरियां) गाते समय

आवलिंचेने - (नींद आनेसे श्रीकृष्णजी) जंभाई ली।

भावार्थ : दोनो तरफसे गोपियां (झूले) पालनेको झुलाते, लोरियां (गीत) गा रहीं थीं। लोरियां सुनते - सुनते श्रीवल्लभ श्रीकृष्णको नींद आ गयी।

इव्वंडे कृष्णाम्मनु, गोवर्धनुण्णि

इव्वंडे कृष्णाम्मनु नारायणुन्नि

इव्वंडे कृष्णाम्मनिंतुलचेतुलकु

इव्वंडे पन्नुंड तोट्ल यशोदोम्मकुनु

इव्वंडे।

तेलुगु पद अर्थः

कृष्णाम्मनु - कृष्णको

गोवर्धनुण्णि - गोवर्धनधारिको

इव्वंडे - देदो

कृष्णाम्मनु - कृष्णको

नारायणुन्नि - नारायणको

इव्वंडे - देदो

कृष्णाम्मनिंतुलचेतुलकु - कृष्णम्मन् इंतुल चेतुलकु

कृष्णाम्मनु - कृष्णको

इंतुल - स्त्रीयों (गोपियों) के

चेतुलकु - हाथोंमें

इव्वंडे - देदो

पन्नुंड - सुलानेके लिये

तोट्ल - पालना पर

यशोदोम्मकुनु - यशोदामायीको

इव्वंडे - देदो

भावार्थ: श्रीकृष्णको गोदमें लेनेके लिये गोपियां एक दूसरेसे मांग रही थी। गोवर्धन नारायण आदि नामोंको लेते हुए उन्हे (श्रीकृष्णकों) एक दूसरेसे ले रही थी। श्रीकृष्णको नींद आ रही थी। वे लोग उन्हें सुलानेके लिये यशोदामायीको देना चाहती थी।

मलहरी, श्रीमालवी गौळ,
ललित, गुज्जरि, रामक्रियल,
ललितमैन श्री रागमुतोनु,
(वलगोंनि) कूडरे पाडरे वच्चि आवला।।

तेलुगु पद अर्थ:

मलहरी, श्रीमालवी गौळ, ललित, गुज्जरि, रामक्रियल, ललितमैन श्री

रागमु - सबके सब रागोंमे

वलगोंनि - कृष्णके चारों ओर घेरनेके लिये

वच्चि - आकर

कूडरे - इक्कठा हो जाइये

पाडरे - गीत गाइये

भावार्थ: गोपियां एक दूसरे को बुलाते श्रीकृष्णको सुलानेके लिये वहां आईं। श्रीकृष्णको घेरकर वे मलहर, मालवीगौळ, ललित, गुज्जरि, रामक्रिय और श्री आदि कई रागोंमें गीत गा रही थी।

(पल्लवि) पवलिंचरा पूल पानुपु मीद

नवनीतचोरा। चिन्नारि गोपाला।

तेलुगु पद अर्थ:

पवलिंचरा - सो जाओ

पूल - फूलोंके

पानुपु - शय्याके

मीद - उपर

चिन्नारि - छोटा

भावार्थ: छोटा नवनीतचोरा। गोपाला। (हे श्रीकृष्ण) फूलोंकी शय्या पर सो जाओ।

वेदमुल कंबमुलु वीलुगा निलिपि

आदिपुराणमुय्यालगा गट्टि

आ दशावतारिनुय्याललो बेट्टि

आदिवराह। पाडेदमु इट्टु वच्चि

पवलिंचरा।

तेलुगु पद अर्थ:

वेदमुल - वेदोंके

कंबमुलु - खंबे

वीलुगा - अपने अपने स्थलमें (अच्छी तरह)

निर्लिपि - खडे करके

आदिपुराणमु - आदिपुराणको

उय्यालगा - पलना (झूला)

ग(क)ट्टि - बांधकर (या बनाकर)

इट्टु वच्चि - यहां आकर

आ - वह

दशावतारिनि - दशावतार (वाले) भगवानको

उय्याललो - पलनेमें (झूलेमें)

बे(पे)ट्टि - लेटाकर

पाडेदमु - (हम) गा रहें हैं

भावार्थ: वेदोंको खंभ बनाकर और पुराणोंको पालना (झूला) बनाकर, झूलनेवाले दशावतारी श्रीकृष्णभगवानको गोपियोंने पालने (झूले)में लेटा दिया। आदिवराह आदि नामोंसे उन्हें संबोधित करते हुए वे गा रही थी।

पालमुन्नीटिलो फणिराजशयना

(ओलि) नुय्यालूगु ओ जलधिशयना

(चालि) नवरत्नमुत्याल जालरुलु

(पालवेल्लिनि मीरु) पट्टुपुट्टमुलु

पर्वलिंचरा।।

तेलुगु पद अर्थ:

पालमुन्नीटिलो - पाल मुन्नीटिलो

पाल - क्षीर

मुन्नीटिलो - समुद्रमें

फणिराज शयन - शेषशयन

(ओलि) नुय्यालूगु - ओलिन् उय्याल ऊगु

ओलिन् - अच्छी तरह

उय्याल - झूला

ऊगु - झूलने वाला

चालि नवरत्नमुत्याल जालरुलु - सुंदर मोतियों सहित नवरत्नोंसे सजाये हुए कंठाभरण (नेकलेस)

पालवेल्लिनि - पाल वेल्लिनि

पाल - क्षीर

वेल्लिनि - समुद्रसे

मीरु - अधिक (सफेद, सुंदर)

पट्टु - रेशमी

पुट्टमुलु - वस्त्र (धारण किया हो)

भावार्थ: क्षीरसमुद्रसे अधिक सफेद वस्त्र, मोतियों सहित नवरत्न कंठाभरण धारण करके, क्षीरसमुद्रमें फणिराज शेषनाग पर लेटकर झुला झूलनेवाले महाविष्णुरूप श्रीकृष्णभगवानको

आदिवराह आदि नामोंसे संबोधित करते हुए गोपियां गीत गा रही थी।

पट्टुपुट्टम्मुलु बागुगा जुट्टि
(पेट्ट)नाभरणालु पेनुपोंदबेट्टि
इष्ट सखुलेल्लरु निंपुगाजुट्टि
पट्टूचिरि यशोदपट्टि चेपट्टि
पवलिंचरा।

तेलुगु पद अर्थ:

पट्टुपुट्टम्मुलु - रेशमी वस्त्र

बागुगा - शृंगार रीतिसे अच्छी तरह

जुट्टि - (लपेटकर) पहनाकार

पेट्टनाभरणालु - धारण करने योग्य आभरण

पेनुपोंदबेट्टि - अच्छी तरह अलंकृत करके

इष्टसखुलेल्लरुन् - इष्ट सखुलु एल्लरुन्

इष्ट - इष्ट

सखुलु - सखियां

एल्लरुन् - सब

इंपुगाजुट्टि - इंपुगा चुट्टि

इंपुगा - अच्छी तरह

चुट्टि - (पलनेको) घेरके

पट्टूचिरि - पट्टि ऊचिरि

पट्टि - (पलनेको पकडकर)

ऊचिरि - झूला झूला रही थी

भावार्थ: श्रीकृष्णको रेशमी वस्त्र पहनाकर, अनेक प्रकारके जेवरसे उन्हे अलंकृत करके, सारी गोपियां पलनेमें लेटे हुए यशोदाके लाला श्रीकृष्णको चारों ओर से घेरकर पलना झुलाते हुए सुला रही थी।

(छोटे बच्चोको सुलानेके लिये जो गायी जाने वाली लोरीको तेलुगुमें जोलपाटा कहते हैं। इस गीतमें भगवानके नाम हैं)

गोकुलपति जो जो। गोविंद जो जो।
रुक्मिणीपति माधव जो जो।
पद्मनाभा पुरुषोत्तमा जो जो।
श्रीमदनसुंदर दामोदरा जो जो।
कृष्ण परमानंदरूप गोविंदा।
गोकुलापति जो जो। गोविंद जो जो।

भावार्थ: इस लोरीमें गोपियां श्रीकृष्णको भगवानके अनेक नामोंसे पुकारते हुए, जो जो, कहते सुला रही थी। इस चरणमें वे श्रीकृष्णको गोकुलपति गोविंद, श्रीरुक्मिणीपति, माधव,

पद्मनाभ, पुरुषोत्तम, मदनसुंदर, दामोदर, कृष्ण, परमानंदरूप, गोविंद जो जो कहते हुए गा रही थी।

अज्ञानतिमिरम्मुनणगिंचिनाडे
सुज्ञानदीपम्मु चूपिंचिनाडे
निर्गुण रूपमु () (नेरि) निर्ल्पिनाडे
सागरम्मनुदोट्ल शयनिंचिनाडे
वटपत्र शयनुडै पवळिंचिनाडे
(नटन) गोपालुडे (ना) पालि गुरुडु।

() तत्त्वमु

तेलुगु पद अर्थ:

अज्ञानतिमिरम्मुनणगिंचिनाडे - अज्ञानतिमिरम्मुनु - अणगिंचिनाडे

अज्ञानतिमिरम्मुनु - अज्ञानांधकारको

अणगिंचिनाडे - नीचे दबा दिया है

सुज्ञानदीपम्मु - सुज्ञानरूप दीये को

चूपिंचिनाडे - दिखाया है

निर्गुणरूपमु (तत्त्वमु) - निर्गुणतत्त्व (रूप) को

नेरि निर्ल्पिनाडे - अच्छी तरह खडा कर दिया है

सागरम्मनुदोट्ल - सागरम्मु अनु तोट्ल

सागरम्मु - समुद्ररूप
तोट्ल - पालनेमें
शयनिंचिनाडे - शयन किया है
वटपत्र शयनुडै - वटपत्रको शय्य करके
पवळिंचिनाडे - सोया है
नटन गोपालुडे - एसे नटन करनेवाला गोपाल ही
ना पालि गुरुडु - मेरा गुरू है

भावार्थ : हे श्रीकृष्ण। आपने सुज्ञान दीपको दिखाकर अंधकाररूपी अज्ञानका निवारण किया है। निर्गुण (रूपको) तत्त्वको स्थापित किया है। आप क्षीरसमुद्रको पालना बनाकर वटपत्रको शय्या करके सोते हैं। ऐसे नटन गोपालरूपमें आप मेरे गुरु है। गोकुलपति जो जो, गोविंद जो जो।

(छोटे बच्चोंको सुलानेके लिये ''लालि लालि'' कहते गानेवाली लोरीको तेलुगुमें लालिपाटा कहतें हैं।

(पल्लवि) लाली लालम्म लालि लाली।

उय्याललोनि बालुनूचरम्म लाली।

तेलुगु पद अर्थ:

उय्यलल्लोनि - पालनेमें लेटे हुये, बालुनूचरम्म - बालुनि -

ऊचरम्मा बालुनि - बालकको

ऊचरम्म - झुलायिये

भावार्थ: (पल्लवि) लाली। लाली। लालम्म लाली। पालनामें लेटे हुए बालकको लालम्म लाली।

धातकु तातयैन तंड्री लाली

भूतकीनि मट्टु पेट्टिन पुत्र लाली।

लालम्म लाली।

तेलुगु पद अर्थ:

धातकु - ब्रह्माका

तातयैन - पिता

तंड्रि - हे पिता (संबोधन)

भूतकिनि - पूतनाको

मट्टु पेट्टिन - मारनेवाला

पुत्र - बेटा, लाली

भावार्थ: सृष्टिकर्ता ब्रह्माके पिता को लाली। राक्षसी पूतनाको मारनेवाले श्रीकृष्णको लाली।

वंतुलेंनियट्टि रूपवंत लाली
श्रीकंतूगन्नट्टि तंड्रि कन्न लाली।
लालम्म लाली।

तेलुगु पद अर्थ:

वंतुलेंनियट्टि - जिसके रूपकी किसी से तुलना नहीं हो सकती है उस

रूपवंत - रूपवाला श्रीकृष्ण

श्रीकंतूगन्नट्टि - श्रीकंतु   कन्नट्टि श्रीकंतु - मन्मथको

कन्नट्टि - उत्पन्न किये

तंड्रि - पिता, (भगवान)

कन्न (संबोधन) - मेरे लाला। लालि

भावार्थ: जिनके रूपकी किसीसे भी तुलना न कर सकते हैं, उन श्रीकृष्णको लाली, (शृंगार रूपधारि) मन्मथका पिता, श्रीकृष्णको लाली।

अपुरूपमैन चिन्नियन्न लाली।
कृपजूडुमय्य श्रीकृष्ण लाली।
लालम्म लाली।

तेलुगु पद अर्थ।

अपुरूपमैन - अपूर्वरूपवाला

चन्नियन्न (संबोधन) - चिन्न अन्न

चिन्नि - छोटा

अन्न - (भाई) लाला

कृप - कृपा करके

जू(चू)डुमय्य - देखो (हम पर कृपा दिखाओ), श्रीकृष्ण। लाली

भावार्थ: अपूर्वरूपवाला श्रीकृष्णलालाकी लाली। हे कृष्ण। तुम्हारी कृपा हम पर दिखाओ। पालनामें हुए श्रीकृष्णको झुलाइऐ।

(यह गीत श्रीतिरुमल वेंकटेश्वरस्वामीकी स्तुति करते रचा गया है। इस गीतमें, श्रीताळ्ळपाक अन्नमाचार्यजीके संकीर्तनोंका प्रभाव दिखाई पडता है। शायद यह गीत श्रीमहाप्रभुजीका होगा। श्रीअन्नमाचार्यजी श्री वल्लभाचार्यजी से बडे थे। लेकिन समकालीन थे इस गीतके पदोंमें और श्रीअन्नमाचार्यजीके एक संकीर्तनके पदोंमें बहुत समानता है। श्रीअन्नमाचार्यजीका यह संकीर्तन श्रीशेषाचार्यजीके एक अमुद्रित लिखित प्रतिमें है। श्रीवेटूरि प्रभाकर शास्त्रीजीके अन्नमाचार्य चरित्र में इसे देख सकते हैं।)

(पल्लवि) (कंटि) निलुवु चक्कनि मेनु दंडलु।
नंटुजूपुलु चूचु नवमदन देवुनि। कंटि कंटि

तेलुगु पद अर्थ:

कंटि - देखा

निलुवु - नीचेसे उपर तक

चक्कनि - सुंदर

मेनु - शरीर

दंडलु - (और) भुज

अंटजूपुलु - प्रेमास्पद आकर्षण करनेवाले वीक्षणसे

चूचु - देखनेवाला

नवमदन - बहुत सुंदर

देवुनि - भगवानको

कंटि कंटि - अच्छी तरह देखा

भावार्थ: जिसको नवमन्मथ सुन्दर देह और भुज हैं। जिसके विक्षणसे प्रेमके साथ वे आकर्षित करते हैं, उस भगवानको मैने अच्छी तरह देखा।

कनकपु जरणालु गज्जेलंदेलुनु,

घनपीतांबरमु पैकट्टु कटारि

(मोनसियोड्डणमुनु) मोगपुल मोलनूलु,

(ओनर नाभी) कमल (मुदरबंधमुलु)

कंटी कंटी।

तेलुगु पद अर्थ:

कनकपु जरणालु - सोनेके चरण

गज्जेलंदेलुनु - पायल और नूपुर

पीतांबरमु पैकट्टु - (उनके उपर) पीतांबर पहना है

कटारि - खड्ग (धारण किया है)

मोनसियोड्डणमुनु - सुंदर मेखला

मोगपुल - सुंदर दिखनेवाला

मोलनूलु - कटिसूत्र

ओनर नाभीकमलमु - नाभीप्रदेशमें कमल (पद्म)

उदर बंधमुलु - उदरबंध

कंटि - मैनें देखा

भावार्थ: (भगवानको) श्री वेंकटेश्वरस्वामीको मैने देखा। उनके सोनेके चरणके उपर पायल और नुपूर हैं। वे पीतांबर धारण किये हैं। उनके कमर पर सुंदर मेखला है। उस मेखलाके नीचे कटिसूत्र पहना हुआ है। ऐसे सुंदर नव मन्मथाकार भगवान (श्रीवेकटेश्वरस्वामी) को मैने देखा मैने देखा।

गरिमनभयहस्त कटिहस्तमुलुनु,
सरस किंकिणी शंख चक्र हस्तमुलु
तरुणि यलिमेल्मंग ताळिपद्मलुनु,
उरमुन कौस्तुभमोप्पैन हारमुलु,
कंटि। कंटि

तेलुगु पद अर्थ:

गरिमनभयहस्तकटिहस्तमुलुनु - गरिमनु अभयहस्त कटि हस्तमुलुनु

(भगवानके) गरिमनु - महत्वपूर्ण

अभयहस्त कटिहस्तमुलुनु - अभय हस्त और कटि हस्त

सरस - सुंदर

किंकिणी - कर्धनी (सहित)

शंख चक्र हस्तमुलु - शंख और चक्र (धारण किये गये) हस्त

तरुणि - तरुणी (अलिमेल्मंगके)

ताळि - मंगळसूत्र

पद्मलुनु - और उनके चरणपद्म

उरमुन - (भगवानके) छाती पर

कौस्तुभमोप्पैन - कौस्तुभमु - ओप्पैन

कौस्तुभमु - कौस्तुभमणि

ओप्पैन - सुंदर

हारमुलु - कंठहार

कंटि - मैं ने देखा

भावार्थ: भगवानके चार हस्त इस प्रकारके हैं। अभयहस्त, कटिहस्त, किंकिणी सहित शंख और चक्र धारण किये गये दो हस्त (कुल चार हस्त)। भगवानके छाती पर अलमेल्मंगाके मंगळसूत्र और उनके चरणपद्म, कौस्तुभ और कंठहार शोभा दे रहे हैं। ऐसे श्रीवेंकटेश्वरस्वामीको मैं ने देखा। मैं ने देखा।

कंटिनि कंठसरुलु घनभुजकीर्तुलु
कंटि नेन्नुटुट सिंगार नाममुनु,
(कंटिश्रीवेंकटेशु कर्णपत्रमुलु
कंटि शिरसुन नमरु घनकिरीटमुनु)
कंटि। कंटि

तेलुगु पद अर्थ:

कंटिनि - मैं ने देखा

कंठसरुलु - कंठमे धारण किये हार

घन - बहुत सुंदर

भुजकीर्तुलु - भुजपर अलंकृत आभारण

नेन्नुटुट - कालप्रदेशमें

सिंगार - शृंगार

नाममुनु - ऊर्ध्वपुंड्र
कर्णपत्रमुलु - कर्णपत्र
शिरसुनन् - शिरपर
न(अ)मरु - शोभा देने वाला
घनकिरीटमुनु - श्रेष्ठ किरीट
कंटि कंटि - देखा, देखा

भावार्थ: भगवान श्रीवेंकटेश्वरस्वामीके गलेमें कंठाभरण है। उनके बाहोंपर बाजुबंदु (भुजकीर्ती) हैं। उनके फालभागमें सुंदर तिलक (उर्ध्व पुंड्र) है। कर्णपत्र उनके कर्णोंपर अलंकृत किया गया है। उनके सिरपर शोबायमान उत्तम किरीट है। ऐसे श्रीवेंकटेश्वरस्वामीको मैने देखा।